



लगभग एक दशक तक ब्रिटिश म्यूजियम के अधिकारी, ग्रीस को एलिन मार्बल्स लौटाने के बारे में बात तक नहीं करते थे, लेकिन अब ग्रीक हैरिटेज अधिकारियों के साथ इस बारे में बात करने को राजी हो गए हैं। संभावना है कि, अब शायद ये कलाकृतियाँ ग्रीस को लौटा दी जाएँ। एलिन मार्बल्स या पार्थेनॉन मार्बल्स, मूर्तियों और फ्रीज (चित्र वल्लरी) का एक संग्रह है, जो मूलतः ईसापूर्व 5 वीं सदी में ग्रीस के अथीनियन एकोपोलिस पर पार्थेनॉन टैम्पल में था। देवी एथीना का यह मंदिर यूनानी कला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। एलिन मार्बल्स को न केवल लोकतंत्र का, बल्कि पश्चिमी सभ्यता के जन्म का प्रतीक भी माना जाता है। उसीसर्वी सदी के आरंभ में ब्रिटिश अभिजात्य वर्ग के टॉमस ब्रूस, एलिन के सातवें अर्ल, एक सैनिक, राजनीतिज्ञ, व तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य में ब्रिटेन के राजदूत भी थे, जिसका उस समय यूनान पर राज था। इतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार टॉमस ब्रूस ने एथेन्स के पार्थेनॉन मंदिर से विवादास्पद रूप से ये प्राचीन मार्बल मूर्तियाँ हथिया ली थीं। उस समय लॉर्ड बायरन ने इस कदम को "कल्चरल वैडलिज्म" (सांस्कृतिक गुंडागर्दी) की संज्ञा दी थी। हालांकि 1810 में ब्रिटिश संसदीय कमेटी ने एलिन का समर्थन किया और फिर ब्रिटिश सरकार ने 1816 में 35,000 पाउण्ड देकर एलिन मार्बल्स खरीद लिए, तब से ये ब्रिटिश म्यूजियम में प्रदर्शित हैं। अब संभवतया वे एथेन्स को लौटाए जा सकते हैं।

पाकिस्तान के प्र.मंत्री शहबाज़ शरीफ के आगे कुआं और पीछे खाई है

उनके लिये आई.एम.एफ. से ऋण लेना नितान्त आवश्यक है, नहीं तो देश की "इकॉनमी" व व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो जाएगी

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 फरवरी। पाकिस्तान में अब जीवन दुःख और आर्थिक उदासी भर है। अधिकांश आबादी हाल ही आयी बाढ़ से उत्पन्न परेशानियों में कैसे भी मदद पाना चाह रही है, लेकिन देश की अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल है और वित्तीय मदद मिलाना भी मुश्किल है।

पाकिस्तान की सरकार के लिए यह समय खासतौर पर तब जब चुनाव नजदीक आ रहे हैं, जनता पद और भार डालने का नहीं है, क्योंकि जनता की तो पहले ही कमर टूट चुकी है, लेकिन प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ को इन्टरनेशनल मॉनिटरी फण्ड (आई.एम.एफ.) से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए ऐसा ही कुछ करना पड़ेगा।

शरीफ पकड़ो या छोड़ो जैसी स्थिति वाले एक दौरा पर खड़े हैं। आई.एम.एफ. इस गरीब देश को उसकी बुरी आर्थिक स्थिति से निकालने के लिए "बेल आउट" करने का इच्छुक है, लेकिन कड़वी सच्चाई यह है कि उसकी शर्तें कठोर हैं। आई.एम.एफ. ने इस बात पर जोर दिया है कि पाकिस्तान को टैक्स

वृद्धि करनी होगी और जनता को दी जा रही सब्सिडीज को खत्म करना होगा, ताकि उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत बन सके, अन्यथा उसे बेल आउट पैकेज

अक्टूबर माह में आम चुनावों का सामना करना है और आई.एम.एफ. की शर्तें स्वीकार करने का उनके लिए मालुम होगा अपने देश की जनता से पूर्णतया

शर्तों को मानने का प्रयास कर रही है, इसलिए उन्होंने अपने देशवासियों को चेतावनी दे दी कि वे अब आगे और कठिन समय के लिए स्वयं को तैयार रखें।

ए.एफ.सी. की एक रिपोर्ट के अनुसार शरीफ ने शुक्रवार को कहा कि आई.एम.एफ. ने पाकिस्तान के समक्ष "बेल आउट" की जो शर्तें रखी हैं वे कल्पना से परे हैं।

शेहबाज़ शरीफ ने मीडिया को बताया कि "मैं इसकी डिटेल्स में नहीं जाऊंगा, लेकिन इतना ही कहूंगा कि हमारी आर्थिक चुनौती अकल्पनीय है। आई.एम.एफ. के साथ हमें जिन शर्तों पर सहमत होना है, वे कल्पना से परे हैं।"

आई.एम.एफ. का एक प्रतिनिधि मण्डल गत मंगलवार को इस्लामाबाद आया और उसने अति महत्वपूर्ण बेल आउट पैकेज पर पुनः बातचीत के एक अंतिम प्रयास के रूप में पाकिस्तान सरकार के अधिकारियों से वार्ता कर देश के फायनेंशियल सिस्टम की समीक्षा की। यह पैकेज पिछले कई महीनों से अटका पड़ा है। चूंकि पाकिस्तान में आगामी अक्टूबर माह में आम चुनाव हैं, इसलिए प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ के नेतृत्व

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पर, कमर तोड़ महंगाई, बाढ़ के कारण अपने घुटनों पर आई पाकिस्तान की जनता, और कीमतें बढ़ना बर्दाश्त नहीं कर पायेगी।

वहीं, आई.एम.एफ. की ऋण देने की शर्तों में सबसे अहम है टैक्स बढ़ाना व सब्सिडी खत्म करना, जिससे इकॉनमी शायद ही अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

पाकिस्तान में अक्टूबर में चुनाव हैं, अतः ये सख्त शर्तें कैसे लागू की जा सकती हैं?

यह बात पाक प्र.मंत्री अच्छी तरह समझ रहे हैं, पर अगर आई.एम.एफ. का ऋण नहीं मिला तो, वैसे अपने आप मरण होगा।

इस दुविधा में पाक प्र.मंत्री कोई चमत्कारिक विकल्प ढूँढ रहे हैं, पर कोई जादूगारी कामयाब होती नजर नहीं आ रही है।

उपलब्ध नहीं करवाया जाएगा। शरीफ टैक्स बढ़ाए जाने की संभावनाओं को लेकर परेशान हैं। उन्हें इसी वर्ष के

विमुख होना और वह इस बात से वाकिफ हैं। फिर भी, उन्हें लगता है कि आई.एम.एफ. द्वारा तय की गई कठोर

गोवा में हैलिकॉप्टर टूरिज्म सेवा शुरू

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 फरवरी। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने शनिवार को गोवा में हैली-टूरिज्म सेवा शुरू कर दी। इस योजना के तहत, ओल्ड गोवा में दौजी-एला हेलीपैड बनाया गया है। पर्यटन मंत्रालय ने अपनी 'स्वदेश दर्शन स्कीम' के माध्यम से इस प्रोजेक्ट में बहुत बड़ा योगदान दिया है। गोवा पर्यटन ने इस अवसर पर एक 'कॉल सेंटर फैसिलिटी भी शुरू की है। यहाँ कार्यरत ऑपरेटर

गोवा के मुख्यमंत्री ने स्वदेश दर्शन स्कीम के तहत यह सेवा शुरू की है।

ऐरजीक्यूटिव चार्टर्स, इन्टरस्टेट ट्रांसफर्स, एयरपोर्ट ट्रांसफर्स तथा कस्टमाइज्ड हेली-टूरर्स की सेवाएं प्रदान करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सेंटर पर्यटन को शीर्ष प्राथमिकता दे रहा है, जैसा कि हाल ही के बजट में दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के 'अमृत काल' स्कीम के अनुरूप, राज्य सरकार भी हेल्थ तथा वेलनेस टूरिज्म पर विशेष ध्यान दे रही है।

क्या जयपुर भी न्यूयॉर्क की तरह अपनी चिड़ियों की हेल्थ की रक्षा के लिये निर्णय लेगा?

-अंजन राय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 फरवरी। में होटल "जयपुर इन" के तीसरे फ्लोर की बालकनी में खड़ा था। उसके मालिक पुष्पेन्द्र भार्गव ने सांझ के आकाश में चल रही एक काली आकृति की ओर इशारा किया।

उन्होंने बताया कि यह पक्षियों का झुंड है जो रात्रि विश्राम के लिये कहीं रुकने से पहले उड़ रहा है। ये सभी पक्षी "मैना" थे जो होटल के सामने स्थित पार्क के बीच मौजूद एक बड़े वृक्ष पर बैठ गए। मैंने काली आकृति को कुछ समय के लिए अलग-अलग समूहों में बंटते देखा और फिर मैं अपने कमरे में चला गया।

कुछ समय बाद मुझे लगा, कि मैं कुछ ऐसा सुन रहा था जैसे कि दूर बह रहे किसी झरने की आवाज़ हो। यह ऐसी ध्वनि थी जो शायद हवा के रूख के साथ कम ज्यादा हो रही थी। जयपुर जैसे व्यस्त शहर के बीच में एक झरना कैसे हो सकता है। मैं कमरे से बाहर आया और यह पता लगाने के लिए बालकनी

में आकर बैठ गया कि आखिर आवाज़ आ कहा से रही है। यह आवाज़ साफ तौर पर बड़े पेड़ से आ रही थी।

यह बड़ी संख्या में मौजूद चिड़ियाओं का कोलाहल था जो पेड़ पर आकर बैठने के साथ ही चहचहाने लगी थीं। एक तरह से यह अविश्वसनीय था। चिड़ियाओं का इतना बड़ा झुण्ड इतने बड़े शहर के बीचों-बीच अपना

अस्तित्व बनाकर कैसे रह सकता है, जहां उन्हें अपना रोजाना का भोजन बमुश्किल ही मिल जाएगा पर अपना दैनिक काम-काज निबटाने की उन्हें शायद ही कोई जगह मिल पाए?

जयपुर इन के मालिक भार्गव ने बनीपार्क सर्किल के एक तरफ एक बड़े खुले स्थान और उसी क्षेत्र में मौजूद अन्य खुली जगहों की ओर इशारा किया।

अस्तित्व बनाकर कैसे रह सकता है, जहां उन्हें अपना रोजाना का भोजन बमुश्किल ही मिल जाएगा पर अपना दैनिक काम-काज निबटाने की उन्हें शायद ही कोई जगह मिल पाए?

जयपुर इन के मालिक भार्गव ने बनीपार्क सर्किल के एक तरफ एक बड़े खुले स्थान और उसी क्षेत्र में मौजूद अन्य खुली जगहों की ओर इशारा किया।

मशहूर पक्षी विज्ञानी सालिम अली की भांति भार्गव भी एक सच्चे पक्षी प्रेमी बन गए थे। ये पक्षी अपने दैनिक भोजन की तलाश में प्रायः इन खुली जगहों पर उड़ते रहे।

भार्गव का मानना था कि वहां शायद कुछ हजार पक्षी हैं। शायद उनके द्वारा की जा रही आवाज़ को देखते हुए उनकी संख्या पांच हजार हो सकती थी।

भार्गव का मानना था कि वहां शायद कुछ हजार पक्षी हैं। शायद उनके द्वारा की जा रही आवाज़ को देखते हुए उनकी संख्या पांच हजार हो सकती थी।

भार्गव का मानना था कि वहां शायद कुछ हजार पक्षी हैं। शायद उनके द्वारा की जा रही आवाज़ को देखते हुए उनकी संख्या पांच हजार हो सकती थी।

भार्गव का मानना था कि वहां शायद कुछ हजार पक्षी हैं। शायद उनके द्वारा की जा रही आवाज़ को देखते हुए उनकी संख्या पांच हजार हो सकती थी।



इंडियन मैना

एक झटके में ही गौतम अडानी ने आधी सम्पत्ति गंवाई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 फरवरी। अभी दो सप्ताह भी नहीं हुए जब भारत के अरबपति गौतम अडानी विश्व के चौथे नम्बर के सबसे अमीर थे, उनकी अपनी सम्पत्ति 120 अरब डॉलर थी। यह उद्योगपति बिल गेट्स और वॉरेन बफेट से भी ज्यादा अमीर था।

उसकी सम्पत्तियों की कीमत 110 अरब डॉलर तक घट गई है और उनकी

अभी दो सप्ताह पहले तक भारत के अरबपति गौतम अडानी, बिल गेट्स और वॉरेन बफेट से भी ज्यादा अमीर माने जाते थे और विश्व के चौथे नम्बर के सबसे अमीर व्यक्ति थे।

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अपनी सम्पत्ति भी आधी ही बची है क्योंकि उन्होंने 61 अरब डॉलर गंवा दिए हैं। हिंडनबर्ग रिसर्च के बाद निवेशकों ने अपना समर्थन वापस ले लिया है। इस अमेरिकन रिसर्च कम्पनी ने उन्होंने कॉरपोरेट इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी का साजिश रचने वाला बताया। अडानी समूह ने इस रिपोर्ट की निंदा की और इसे निराधार और साजिश

वित्त मंत्री ने अडानी प्रकरण में सरकार की छवि बचाने की पूरी कोशिश की

निर्मला सीतारमन ने कहा, सरकार रैग्युलेटर्स, आर.बी.आई., सेबी आदि को अडानी प्रकरण में पूरा काम निष्पक्षता से करने की स्वतंत्रता देगी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 4 फरवरी। छवि को हो चुके नुकसान को रोकने (इमेज डैमेज कंट्रोल) की कवायद में आज वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन भी शामिल हो गईं। उन्होंने कहा कि जहाँ तक अडानी ग्रुप के खिलाफ लगे फ्राँड के आरोपों का प्रश्न है, सरकार नियामकों (रैग्युलेटर्स) को अपना काम करने देगी। ज्ञातव्य है कि अडानी ग्रुप के खुलासे के बाद स्टॉक मार्केट में अडानी के शेयरों को औने-पौने दामों में बेचा जाना शुरू हो गया, जो इससे पहले कभी नहीं हुआ।

सीतारमन ने "न्यूज़ व्रीफिंग" के दौरान कहा, "रैग्युलेटर अपना काम करेंगे। आपने इस बिन्दु पर कल रिजर्व बैंक का बयान पढ़ा होगा और इससे भी पहले, बैंक तथा एल.आई.सी. स्वयं

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

वित्त मंत्री के अनुसार रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) तो इस प्रकरण के बारे में अपनी टिप्पणी दे ही चुका है।

साथ ही लाइफ इन्शोरेंस कॉरपोरेशन व अन्य बैंक भी बता चुके हैं, उनका कितना "एक्सपोज़र" है अडानी ग्रुप में।

सोशल मीडिया पर भी भारी प्रचार हो रहा है कि, हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट का मकसद केवल मोदी सरकार व भारत की सार्वभौमिकता के खिलाफ साजिश रचना है।

वित्त मंत्री ने आक्रामक रूख अपनाते हुए, यह भी कहा कि, अडानी द्वारा एफ.पी.ओ. वापस लेने को कोई बड़ी बात नहीं माना है, क्योंकि कई बार पहले भी एफ.पी.ओ. "कैंसल" हुए हैं भारत में, पर इनसे क्या कभी किसी की छवि को भारी क्षति पहुंची।

आर.बी.आई. ने इसमें आगे जोड़ा कि, कैपिटल एडिक्वेसी, एसेट क्वालिटी, लिक्विडिटी तथा प्रॉफिटबिलिटी की दृष्टि से अडानी ग्रुप काफी "स्वस्थ" है।

दूसरी ओर यह भी खबर है कि, हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के बाद अडानी ग्रुप की सात कम्पनियों की मार्केट वैल्यू में सौ बिलियन डॉलर की कमी हुई है।

आगे आकर यह कह चुके हैं कि उनका प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

वित्त मंत्री के अनुसार रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) तो इस प्रकरण के बारे में अपनी टिप्पणी दे ही चुका है।

साथ ही लाइफ इन्शोरेंस कॉरपोरेशन व अन्य बैंक भी बता चुके हैं, उनका कितना "एक्सपोज़र" है अडानी ग्रुप में।

सोशल मीडिया पर भी भारी प्रचार हो रहा है कि, हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट का मकसद केवल मोदी सरकार व भारत की सार्वभौमिकता के खिलाफ साजिश रचना है।

वित्त मंत्री ने आक्रामक रूख अपनाते हुए, यह भी कहा कि, अडानी द्वारा एफ.पी.ओ. वापस लेने को कोई बड़ी बात नहीं माना है, क्योंकि कई बार पहले भी एफ.पी.ओ. "कैंसल" हुए हैं भारत में, पर इनसे क्या कभी किसी की छवि को भारी क्षति पहुंची।

आर.बी.आई. ने इसमें आगे जोड़ा कि, कैपिटल एडिक्वेसी, एसेट क्वालिटी, लिक्विडिटी तथा प्रॉफिटबिलिटी की दृष्टि से अडानी ग्रुप काफी "स्वस्थ" है।

दूसरी ओर यह भी खबर है कि, हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के बाद अडानी ग्रुप की सात कम्पनियों की मार्केट वैल्यू में सौ बिलियन डॉलर की कमी हुई है।

आगे आकर यह कह चुके हैं कि उनका प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस

प्रकार रैग्युलेटर अपना काम करेंगे।" "लेवल ऑफ़ एक्सपोज़र" क्या है। इस